Nāsadīyam
A Multi-Disciplinary National Research Journal (Annual)
Peer Reviewed/Refereed
Available online at: https://nasadiyam.dmmkkr.ac.in/
ISSN: 3108-0200 (Online)
Volume 4, Issue 1 (Jan – Dec), 2025, Pp 48-54

प्रसिद्ध पार्श्व गायक मन्ना डे का संगीत जगत को योगदान- एक अवलोकन

डॉ॰ शालू रानी
सहायक प्रवक्त्री (संगीत गायन विभाग)
दयानन्द महिला महाविद्यालय
कुरूक्षेत्र, हरियाणा, भारत
ईमेलः- shalujoshi62@gmail.com
दूरभाषः 8295590130

गीतू सैनी
सहायक प्रवक्त्री (संगीत वादन विभाग)
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत
ईमेलः- sainigeetu71@gmail.com
दूरभाषः 7082263267

संक्षेपिका

यह शोधपत्र भारतीय चित्रपट संगीत के महान पार्श्व गायक मन्ना डे के जीवन, संगीत शिक्षा, साधना और उनके बहुआयामी योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। मन्ना डे ने शास्त्रीय संगीत की गहरी नींव के साथ फिल्म संगीत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। प्रारम्भिक जीवन में पारिवारिक प्रेरणा, विशेष रूप से के.सी.डे. मार्गदर्शन तथा बाद में उस्तादों से प्राप्त शास्त्रीय प्रशिक्षण ने उनके गायन को तकनीकी दक्षता और भावात्मक गहराई प्रदान की। यह अध्ययन दर्शाता है कि किस प्रकार मन्ना डे ने शास्त्रीयता और लोकप्रियता के बीच संतुलन स्थापित करते हुए फिल्म संगीत को समृद्ध किया। उनके गायन में रागदारी, उच्चारण की स्पष्टता, सुरों की शुद्धता तथा भावाभिव्यक्ति की उत्कृष्टता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इस शोध पत्र में उनके संघर्ष, साधना, संगीत निर्देशन के अनुभव तथा भारतीय फिल्म संगीत पर उनके स्थायी प्रभाव का भी मूल्यांकन किया गया है। निष्कर्षतः, मन्ना डे भारतीय संगीत जगत के ऐसे स्तंभ सिद्ध होते हैं जिन्होंने शास्त्रीय संगीत की गरिमा को लोकप्रिय संगीत में सफलतापूर्वक प्रतिष्ठित किया।

कुंजी शब्द- मन्ना डे, पार्श्व गायन, भारतीय चित्रपट संगीत, शास्त्रीय संगीत, रागदारी, संगीत साधना, फिल्म संगीत, भावाभिव्यक्ति, संगीत योगदान

शोध पत्र

मन्ना डे भारतीय चित्रपट संगीत में एक महान पार्श्व गायक कलाकार हुए हैं। मन्ना डे का जन्म 5 मई सन् 1920 ई. को कलकत्ता में हुआ। ऐसा माना जाता है कि उनके चाचा के. सी. डे की विरासत लेकर ये संगीत के क्षेत्र में आगे बढ़े। के.सी. डे स्वयं भी बहुत अच्छे गायक थे। अतः बचपन से ही उनकी स्वर लहरियों की छत्र छाया में बढ़ने वाले बालक मन्ना का संगीत के प्रति आकर्षण होना अत्यंत स्वाभाविक ही था। इनके पिता जी तो उन्हें वकील बनाना चाहते थे परन्तु अपने पहाड़ी आवाज वाले चाचा से मन्ना डे ने अनायास ही संगीत सीखना आरम्भ कर दिया। कहा जाता है कि एक बार जब कॉलेज में संगीत स्पर्धा होने वाली थी, मन्ना डे ने इस प्रतियोगिता में भाग लेने की इजाजत माँगी तो घर से उन्हें आज्ञा नहीं मिली। जब उनके कॉलेज के दोस्तों को पता चला तो उन्होंने इस बात को गम्भीरता से लिया और मन्ना डे के घर पर धरना दे दिया क्योंकि उन्हें मन्ना डे की तैयारी और संगीत के प्रति लगन का पूरा ज्ञान था। घरवालों से इजाज़त प्राप्तकर लेने के बाद ही वे उनके घर से उठे। उस स्पर्धा में नौ प्रतियोगी थे जिसमें वे अव्वल आये। संगीत की शिक्षा के साथ मन्ना डे ने बी.ए. की परीक्षा सन् 1940 ई0 में पास की। अब समय आया तो इनके पिता ने मन्ना डे को एल.एल.बी. (वकालत) करावाने की सोची परन्तु मन्ना डे थे कि टस से मस नहीं हुए। चाचा के. सी. डे ने भी मन्ना डे का साथ दिया और अपने बड़े भाई से संगीत के पक्ष में

दलील दी। अतः इनके पिता जी ने हठ छोड़ दी और मन्ना डे को संगीत शिक्षा पूर्ण करने की आज्ञा मिल गई। मन्ना डे ने प्रारम्भ में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा कलकत्ता के. उ. दबीर खाँ से ली। आगे चलकर मुम्बई में इन्होंने उस्ताद अब्दुल रहमान खाँ और उस्ताद अमान अली खाँ से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली। सन् 1942 ई0 में के. सी. डे कलकत्ता छोड़कर मुम्बई आए और उनके साथ ही मन्ना डे भी मुम्बई आ गये। उन दिनों संगीत निर्देशकों की अच्छी आमदनी होती थी। अतः के. सी. डे के सहायक के रूप में मन्ना डे कार्य करने लगे। मन्ना डे की चित्रपट संगीत की यात्रा चाचा के सहायक के रूप में आरम्भ हो गई। प्रारम्भ में इन्होंने दो चित्रपटों में संगीत दिया जिनके नाम थे 'मेरा गाँव' और 'तमन्ना'। इन चित्रपटों में चाचा जी के साथ-साथ इन्होंने पार्श्व गायन प्रारम्भ किया। मन्ना डे चित्रपट संगीत में कुछ कर दिखाने की इच्छा से बड़ी लगन और मेहनत से कार्य करने लगे। इसी बीच एक और बंगाली संगीत निर्देशक एच. पी. दास ने मन्ना डे को अपना सहायक बना लिया। सन् 1942 में मन्ना डे को 'रामराज्य' चित्रपट में पार्श्व गायन का अवसर मिला। इस चित्रपट के संगीत निर्देशक शंकर राव व्यास थे। चाचा के. सी. डे ने शंकरराव जी को सलाह दी कि मन्ना डे की आवाज का भक्ति गीतों में प्रयोग करके देखें। शंकरराव जी ने उनकी सलाह मानी क्योंकि गायन और संगीत निर्देशन दोनों क्षेत्र में उनकी अच्छी साख थी। इस चित्रपट में मन्ना डे ने दो एकल गीत और एक द्वन्द्व गीत गाए। पहला गीत 'अजब विधि का खेल' अधिक लोकप्रिय नहीं हुआ। दूसरा गीत 'चल तू दूर नगरिया' उन दिनों के हिसाब से अच्छी और आधुनिक धुन के कारण कुछ हद तक लोकप्रिय हुआ। लेकिन तीसरा गीत 'त्यागमयी तू गयी' सबसे अधिक लोकप्रिय हुआ।

इसके पश्चात् संगीतकार बुलो. सी. रानी के संगीत निर्देशन में थोड़ा बहुत गाया। सन् 1947 ई0 से मन्ना डे को उस समय की कुछ लोकप्रिय गायिकाओं के साथ गाने का अवसर मिला जैसे ज्ञान दत की 'गीत-गोविन्द' में राजकुमारी, 'सती-तोरल' में अमीरबाई और साथियों के साथ भजन गाये। इसी बीच संगीत निर्देशक सुधीर फड़के के चित्रपट 'आगे बढ़ो' में 'सुनो सुनो ओ नर-नारी' यह कथा पुरानी है' ऐसा कीर्तन की तरह का गीत गाया। फिर अगले वर्ष 'रामबाण' के दो भजन 'जयो राम, जयो राम', तथा 'रोम-रोम राम का' गाया । अतः सन् 1950 ई0 तक इन्हें केवल भजन गायन में अवसर मिले जो बहुत कम थे।

सन् 1950 ई0 में मन्ना डे साहब को संगीतकार एस. डी. बर्मन का सहायक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बर्मन दा बाम्बे टॉकीज के चित्रपट 'मशाल' के लिये संगीत रचना कर रहे थे। उनके मन में 'ऊपर गगन विशाल' की धुन घूम रही थी और आँखों के सामने के. सी. डे थे। परन्तु के. सी. डे उस समय कलकता में थे तो बर्मन दा ने सोचा कि क्यों न उनके भतीजे मन्ना डे को ही लेकर इस समय यह गीत रिकार्ड कर लें, आगे देखी जायेगी। बस क्या था, मन्ना डे ने अवसर मिलते ही अपनी सारी गायकी की कुशलता उस गाने में लगा दी और रिकार्डिगं का नतीजा देख कर सब हैरान रह गये। सब की यही प्रतिक्रिया थी कि क्या यही गीत गाने के लिये मन्ना डे का जन्म हुआ था ? इस गीत ने मन्ना डे का भाग्य बदल दिया और मानों ये विशाल गगन में उड़ान भरने लगे हों।

सन् 1953 से 1956 ई0 तक चार वर्षों में मन्ना डे को प्रत्येक वर्ष 10-20 चित्रपटों में गायन का अवसर मिलता रहा। 'शंकर' यह नाम मन्ना डे के लिये भाग्यशाली सिद्ध हुआ क्योंकि पहला अच्छा मौका शंकरराव व्यास ने दिया औरबाद में भी अवसर देते रहे। इसके पश्चात् शंकर-जयकिशन ने उनसे बहुत से शास्त्रीय एंव अन्य गीत गवाए। मन्ना डे साहब ने कहा कि "हालांकि मेरे चाचा ने मुझे शास्त्रीय संगीत की तालीम दी है, परन्तु मैं जानता हूँ कि जिन गीतों को मैने गाया है, अगर उन्हें रफी ने गाया होता तो मैं यह नहीं कह सकता कि वो मुझसे

अच्छा नहीं गाते। उन्हीं के शब्दों में 'वैसे तो हम सभी का अपना-अपना क्षेत्र था लेकिन रफी की हरफन-मौलाओं में गिनती होती थी। हर तरह का गाना हर प्रकार की वस्तु स्थिति में गाने के लिये हम सक्षम थे लेकिन रफी साहब हम सब से ऊपर थे। रफी के आने के पश्चात् उन्हें सुनकर मुझमें आत्मविश्वास आया और मेरी कला में निखार आया इसलिये मैं रफी को सबसे ऊपर मानता हूँ। एक ही क्षेत्र के प्रतिद्वन्दी एक दूसरे की प्रशंसा करें ऐसा अवसर देखने सुनने को मिलता नहीं है जो खुले दिल में सबके सामने स्वीकार करते हैं कि वो नम्बर एक नहीं हैं। नम्बर एक तो मोहम्मद रफी ही हैं। ये वाकई मन्ना डे साहब का बड़प्पन है।

मन्ना डे कहते हैं "महान संगीतकार के निर्देशन में गाना भी एक वास्तविक चुनौती है। याद कीजिये आर.डी.बर्मन की 'पडोसन' फिल्म का गाना 'एक चतुर नार....' जो कि महमूद पर फिलमाया गया था जिसमें इन्होंने दक्षिण भारतीय संगीतज्ञ का रोल किया था और मुझे वैसे ही गाना था ताकि उस चरित्र पर जँचे, ये एक चुनौती थी लेकिन मैने इसे स्वीकार किया।'' वे कहते हैं कि साधारणतया मैं अपने गीतों पर काफी ध्यान देता हूँ। गीत के बोलों को ध्यान से पढ़ता हूँ फिर कल्पना करता हूँ कि किस जगह गीत गाया जायेगा और अभिनेता को क्या चाहिए? यह बहुत मेहनत का काम है लेकिन आजकल के गायक यह नहीं जानते कि क्या रिकॉर्ड करने जा रहे हैं और रिकार्डिंग के समय काफी जल्दबाजी की जाती है तथा निर्माता और संगीत निर्देशक भी परवाह नहीं करते। पहले के संगीतकार और गायक अपने गीतों पर जी-जान एक करके काम करते थे यह नहीं देखते थे कि समय अधिक लग गया बल्कि वक्त के बाद जो रचना उभर कर आती उसके आनन्द में खो जाते। न ही उन्हें पैसे का लालच था कि मशीन की तरह काम करे और जितना जल्दी हो सके उतनी अधिक रचनाएँ बनाएँ, गाएँ और फिर आराम से बैठें। वे दाम से ज्यादा काम को अहमियत देते थे। एक गाने की कई दिनों तक रिहर्सल चलती थी जब तक निर्माता, संगीत निर्देशक और गायक पूरी तरह सन्तुष्ट नहीं हो जाते थे तब तक गीत रिकॉर्ड करने की सोचते भी नहीं थे। यही कारण था कि आज से 60-65 साल पहले की जो गीत रचनाएँ है वो सुनकर आज भी मन आनन्दित होता है। आज भी वो गीत आत्मा की गहराई से उतरने की क्षमता रखते हैं। आज भी जो पहले के संगीतकार और गायक हैं,वे वर्तमान हालात से समझौता नहीं करते वे अपनी कला की मृत्यु देखना नहीं चाहते बल्कि उसे अमर रखना चाहते हैं। मन्ना डे उच्च कोटि के गायक हैं जो हालात से समझौता कर अपनी कला का स्तर कभी नहीं गिरने देंगे।

मन्ना डे ने सन् 1997 ई0 का एक वाक्या बताया कि कुछ महीने पहले एक अभिनेता ने एक फिल्म के गीत के लिये मुझे बुलाया जिसका निर्देशन भी वह खुद ही कर रहा था। मैं गाने के लिये अधिक इच्छुक भी नहीं था लेकिन उसके काफी कहने पर मैं चला गया। गाने की रिकॉर्डिंग की शर्तें देखकर मुझे झटका सा लगा, गाने में न तो मनोरंजन था और न ही कुछ नयापन था। मैंने गाने से इन्कार कर दिया। इस बात से स्पष्ट होता है कि मन्ना डे जैसा कलाकार अपनी कला की पूजा करता है फूहड़ संगीतकारों के सामने घुटने नहीं टेकता।

मन्ना डे ने शास्त्रीय संगीत पर आधारित अनेकों गीत गाए हैं जिनमें से कुछ प्रमुख गीतों का ब्यौरा इस प्रकार हैः-1955 में संगीतकार वसन्त देसाई के चित्रपट 'झनक-झनक पायल बाजे' इस नृत्य प्रधान चित्रपट में मन्ना डे के शास्त्रीय संगीत की कुशलता का अच्छा प्रयोग दिखाई देता है। शंकर-जयकिशन ने शास्त्रीय संगीत की अभिव्यक्ति के लिये मन्ना डे को सबसे आगे रखा है। सन् 1955 में चित्रपट 'बूट पालिश' में 'लपक-झपक तू' मजेदार शास्त्रीय गीत मन्ना डे को दिया गया। हास्य प्रधान होते हुए भी यह गीत मन्ना डे की आवाज में अत्यधिक

आनन्द प्रदान करता है। चित्रपट 'बसन्त बहार' में पण्डित भीमसेन जोशी जैसे शास्त्रीय संगीत के महान गायक के साथ मन्ना डे ने राग बसन्त बहार में जुगलबन्दी प्रस्तुत की। पण्डित भीमसेन जोशी मन्ना डे साहब की तैयारी देखकर खुश हो गये और बोले, 'ऐसा व्यक्ति शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में होता तो चमक उठता'। परन्तु चलो अच्छा हुआ मन्ना डे शास्त्रीय संगीत के मंच प्रदर्शन के क्षेत्र में नहीं गये, नहीं तो उसी में बंध कर रह जाते और शास्त्रीय संगीत के गूढ़ ज्ञान से अनभिज्ञ करोड़ों लोग उनकी कला से वंचित रह जाते।

तालिका 1: मन्ना डे के शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीत

वर्ष	गीत	चित्रपट	संगीत निर्देशक	गायक	राग
1951	एक दो दिलों का फासला	दो सितारे	अनिल बिस्वास	मन्ना डे	दरबारी कान्हड़ा
1953	ऋतु आये ऋतु जाये	हमदर्द	अनिल बिस्वास	मन्ना डे, लता	बसंत बहार
1956	ये कहानी है दिये की	तूफान और दिया	बसंत देसाई	मन्ना डे	मालकौंस
1956	केतकी गुलाब	बसंत बहार	शंकर जयकिशन	पं॰ भीमसेन जोशी	बसंत बहार
1959	प्रीतम दरस दिखाओं	चाचा जिंदाबाद	मदनमोहन	मन्ना डे	ललित
1960	तू है मेरा प्रेम-देवता	कल्पना	ओ॰पी॰ नैयर	रफी, मन्ना डे	ललित
1960	ना तो कारवाँ	बरसात की तलाश है	रोशन रात	मन्ना डे, आशा व साथी	यमन, यमन कल्याण
1962	सप्त सुरन तीन ग्राम	संगीत सम्राट तानसेन	एस॰एन॰ त्रिपाठी	मन्ना डे	यमन, यमन कल्याण
1963	मम्मद शां रंगीले	जबसे तुम्हें देखा है	दत्ता राम	मन्ना डे	मियां मल्हार
1963	लागा चुनरी में दाग	दिल ही तो है	रोशन	मन्ना डे	भैरवी
1963	पूछो न कैसे मैंने	मेरी सूरत तेरी आँखें	एस॰डी॰ बर्मन	मन्ना डे	अहीर भैरव
1964	हर नई किरण	संत ज्ञानेश्वर	लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल	मन्ना डे	तोडी
1964	तुम गगन के चन्द्रमा	सती-सावित्री	लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल	मन्ना डे	यमन, यमन कल्याण

1965	सरफरोशी की तमन्ना	शहीद	प्रेम-धवन	मन्ना डे	दरबारी कान्हड़ा
1966	एक ऋतु आये	सौ साल बाद	लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल	मन्ना डे	भटियार/धन्यधैवत
1966	ए मां तेरी सूरत से अलग	दादी माँ	रोशन	मन्ना डे	बिहाग
1968	झनक-झनक तोरी	मेरे हजूर	शंकर-जयकिशन	मन्ना डे	दरबारी कान्हड़ा
1971	रे मन सुर में गा	लाल पत्थर	शंकर-जयकिशन	मन्ना डे	यमन

इसके अतिरिक्त अनेक और गीत हैं जो मन्ना डे साहब की बेजोड़ गायकी पाकर लोकप्रिय हो गये। मन्ना डे साहब ने कव्वाली और हल्के-फुल्के गीत भी उतनी ही सुन्दरता से गाए जैसे संगीतकार रोशन के निर्देशन में बना चित्रपट ‘बरसात की रात’ की कव्वाली ‘न तो कारवाँ की तलाश है’ मन्ना डे साहब ने इस खूबी से गाई कि मुहम्मद रफी और मन्ना डे साहब की आवाज को अलग-अलग करना कठिन था। इसके अतिरिक्त हल्के-फुल्के गीत इतने सुंदर हैं कि आज भी उतने ही चाव से सुने जाते हैं। एक तालिका संलग्न है-

तालिका 2: मन्ना डे के द्वारा गाये गए प्रमुख गीत

वर्ष	गीत	चित्रपट	संगीत निर्देशक
1955	प्यार हुआ इकरार	श्री 420	शंकर-जयकिशन
1958	बाबू समझो इशारे	चलती का नाम गाड़ी	एस०डी० बर्मन
1959	या अल्लाह के नाम	उजाला	शंकर-जयकिशन
1959	आजा सनम मधुर चाँदनी	चोरी-चोरी	एस०डी० बर्मन
1959	एक रात भीगी-भीगी	चोरी-चोरी	एस०डी० बर्मन
1962	किसने चिलमन से मारा	बात एक रात की	एस०डी० बर्मन
1966	चुनरी संभाल गोरी	तीसरी कसम	शंकर-जयकिशन
1968	एक चतुर नार	पडोसन	एस०डी० बर्मन

मन्ना डे के भजनों को सुनकर कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। कुछ प्रमुख भजनों के उदाहरण प्रस्तुत हैं-

तालिका 3: मन्ना डे के द्वारा गाये गए प्रमुख भजन

वर्ष	भजन	चित्रपट	संगीत निर्देशक
1955	तू प्यार का सागर है	सीमा	शंकर-जयकिशन
1957	कौन आया मेरे मन के द्वारे	देख कबीरा रोया	मदन मोहन
1959	बता दो कौन गली गये	मधु	रोशन

1968	दे दाता के नाम	आँखें	रवि
1970	ओ प्राणी रे	चिंगारी	रवि
1974	है जग में जिसका	रेशम की डोरी	शंकर-जयकिशन
1974	आयो कहाँ से घनश्याम	बुढ्ढा मिल गया	आर०डी० बर्मन

तालिका 4: मन्ना डे के द्वारा गाये गए लोकप्रिय गीत

वर्ष	गीत	चित्रपट	संगीत निर्देशक	गायक
1956	निर्बल से लड़ाई बलवान की	तूफ़ान और दिया	वसंत देसाई	मन्ना डे
1956	पंछी बनू उड़ती फिरू	चोरी-चोरी	शंकर जयकिशन	मन्ना डे लता
1961	रूप तुम्हारा आँखों से पी लूँ	सपेरा	अजीत मजैण्ट	मन्ना डे
1963	लाला चुनरी में दाग	दिल ही तो है	रोशन	मन्ना डे
1965	ए मेरी जुहराजबी तुझे मालूम नहीं	वक्त	रवि	मन्ना डे
1969	तुझे सूरज कहूँ या चन्दा	एक फूल दो माली	रवि	मन्ना डे
1970	जिन्दगी कैसी ये पहेली	आनंद	सलिल	मन्ना डे
1970	ऐ भाई, जरा देख के चलो	मेरा नाम जोकर	शंकर-जयकिशन	मन्ना डे
1974	है जग में जिसका	रेशम की डोरी	शंकर-जयकिशन	मन्ना डे

तालिका 5: मन्ना डे द्वारा प्राप्त किए गए अवार्ड

वर्ष	अवार्ड
1969	फिल्म 'मेरे हजूर' के लिये श्रेष्ठ पुरूष-पार्श्व गायक का राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड
1971	बंगाली फिल्म 'निशी पदमा' के लिये श्रेष्ठ पुरूष-पार्श्व गायक का राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड
1971	भारत सरकार द्वारा पदम श्री अवार्ड
1985	मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 'लता मंगेशकर' अवार्ड
1990	मिथुन फैन्स ऐसोसिएशन द्वारा 'श्याम मिश्रा' अवार्ड
1999	कमला देवी ग्रुप द्वारा 'कमला देवी राय' अवार्ड
2003	पश्चिम बंगाल की सरकार द्वारा 'अल्लाउदीन खान' अवार्ड
2004	केरल सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय अवार्ड' पार्श्व गायक के रूप में
2005	महाराष्ट्र सरकार द्वारा 'लाईफ टाईम एचिवमेंट' अवार्ड
2007	उड़ीसा सरकार द्वारा 'अक्षय' अवार्ड
2007	नेशनल फिल्म अवार्ड्स समारोह में राष्ट्रपति द्वारा दादा साहब फाल्के पुरस्कार

मन्ना डे एक ऐसे गायक हुए हैं, जिनकी आवाज लम्बी उम्र के साथ-साथ लम्बे समय तक मधुर बनी रही। फिर 24 अक्तूबर 2013 को यह जगमगाता तारा लुप्त हो गया। आने वाली प्रत्येक 24 अक्तूबर को आकाश अश्रुपरित नेत्रों से धरती को देखेगा, संसार स्मृतियों के दीप जलायेगा और मन्ना डे साहब यादों के फूल बनकर सदा पुंज की भांति आने वाले हर नये गायक, वादक के लिये मार्गदर्शन करते रहेंगे। गायकों की वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिये वे सदैव जीवित रहेंगे।

सन्दर्भ सूची

1. डे, मन्ना. (2013). यादें जी उठीं (आत्मकथा). नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया.
2. बूथ, ग्रेगरी डी. (2008). मुंबई के फिल्म स्टूडियो में संगीत निर्माण (हिंदी अनुवाद संस्करण). नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
3. मोरकॉम, एना. (2007). हिंदी फिल्म गीत और सिनेमा. लंदन: ऐशगेट पब्लिशिंग.
4. शर्मा, रेखा. (2020). मन्ना डे के गायन में शास्त्रीयता और बहुआयामी प्रतिभा. भारतीय संगीत अध्ययन पत्रिका, 8(1), 33–40.
5. कुमार, अजय. (2018). हिंदी सिनेमा में पार्श्व गायन की परंपरा और विकास. संगीत शोध पत्रिका, 12(2), 45–52.
6. तिवारी, संजय. (2017). हिंदी फिल्म संगीत में राग आधारित गीतों की परंपरा. नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स.
7. वर्मा, सीमा. (2019). भारतीय सिनेमा के पार्श्व गायकों का सांस्कृतिक योगदान. कला एवं संस्कृति विमर्श, 5(3), 60–68.
8. मिश्रा, दीपक. (2021). मन्ना डे: व्यक्तित्व और कृतित्व. वाराणसी: संगीत प्रकाशन.